शाश्वती

द्वितीयो भागः

द्वादशवर्गाय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

(ऐच्छिकपाठ्यक्रमः)

12078

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विदधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि- गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नव देहली
नवम्बर 2006

निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, *पूर्व अध्यक्ष,* भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, *पूर्व अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, *पूर्व प्रोफ़ेसर* एवं *अध्यक्ष,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

समन्वयक

कमलाकान्त मिश्र, *पूर्व प्रोफ़ेसर* संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनिता शर्मा, *प्रवक्ता,* संस्कृत, विवेकानन्द स्कूल, डी-ब्लॉक आनन्द विहार, दिल्ली

केदारनारायण जोशी, *अध्यक्ष,* संस्कृत अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म.प्र.

गुलाब सिंह, *प्रवक्ता,* संस्कृत, श.ब.कु.वि. राजकीय सर्वोदय विद्यालय, सिविल लाइन्स, दिल्ली-54

दीप्ति त्रिपाठी, *अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

बाबूलाल शर्मा, *अध्यक्ष,* संस्कृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

यतीन्द्र कुमार शर्मा, *प्रवक्ता,* संस्कृत, श.अ.बि. राजकीय सर्वोदय विद्यालय न. 1, लूडलो कैसल, दिल्ली-54

विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल, *रीडर,* राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, आ.प्र.-517507

शान्ति आर्या, *प्रवक्ता,* एस.सी.ई.आर.टी., गुरूग्राम, हरियाणा

सुरेश चन्द्र शर्मा, *प्राचार्य,* राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, नं.-1, शक्ति नगर, दिल्ली-7

विभागीय सदस्य

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर संस्कृत,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

रणजित बेहेरा, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर संस्कृत,* भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् सुरेन्द्र झा, प्राचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ कैम्पस की आभारी है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासंभव योगदान दिया है। चन्द्रशेखर दास वर्मा की कृति 'पाषाणीकन्या' के अनुवादक नारायण दाश, हृषीकेश भट्टाचार्य, देवर्षि कलानाथ शास्त्री एवं भट्ट मथुरानाथ शास्त्री प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है, जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्यसामग्री सङ्कलित की गई है।

सत्र 2017-18 में पुस्तक के पुनरीक्षण कार्य के समन्वयन के लिए भाषा शिक्षा विभाग के के.सी. त्रिपाठी, *प्रोफ़ेसर*, जतीन्द्र मोहन मिश्र, *प्रोफ़ेसर*, संगीता शर्मा, *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, को परिषद् साधुवाद करती है। पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए परिषद् पी.एन. शास्त्री, *प्रोफ़ेसर*, कुलपति, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, रमेश कुमार पांडेय, *प्रोफ़ेसर*, कुलपति, श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, रमेश भारद्वाज, *प्रोफ़ेसर*, संस्कृत विभाग-दिल्ली विश्वविद्यालय, रंजना अरोड़ा, *प्रोफ़ेसर* एवं विभागाध्यक्ष, डी.सी.एस, एन.सी.ई.आर.टी., आभा झा, *पी.जी.टी.*, संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। पुस्तक पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग हेतु जगदीश चन्द्र काला, *जे.पी.एफ़.*, यासमीन अशरफ, *जे.पी.एफ़.* एवं रेखा शर्मा, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रकाशन कार्य में सक्रिय सहयोग के लिए भाषा शिक्षा विभाग कंप्यूटर स्टेशन के *इन्चार्ज* परशराम कौशिक, *कॉपी एडीटर* विभूति नाथ झा, सर्वेन्द्र कुमार एवं सतीश झा; *प्रूफ रीडर* राजमङ्गल यादव एवं *डी.टी.पी. ऑपरेटर* कमलेश आर्या, हरिदर्शन लोधी *डी.टी.पी. ऑपरेटर*, ममता गौड़ *संपादक* संविदा, प्रकाशन प्रभाग धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत भारत की आत्मा और भारतीय संस्कृति का स्रोत है। वैदिक काल से आज तक सतत् प्रवहमान संस्कृत साहित्य की अजस्र स्रोतस्विनी में हमारे ऐहिक तथा पारलौकिक चिन्तन, देशभक्ति और विश्वबन्धुत्व की भावना का प्रसार, आचार एवं विचार का मञ्जुल मणिकाञ्चन समवाय, ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में गम्भीर चिन्तन, आत्मा और परमात्मा में ऐक्य के माध्यम से प्राणिमात्र में समता के भाव की स्थापना और उदात्त संस्कारों के द्वारा श्रेष्ठ नागरिकों के निर्माण की क्षमता विद्यमान है।

संस्कृत भाषा और उसका समृद्ध वाङ्मय राष्ट्र की एक ऐसी निधि है, जो सनातन मूल्यों और अभिनव प्रवृत्तियों में समन्वय स्थापित करने की अद्भुत क्षमता से सम्पन्न है। देश की इस सर्वाधिक प्राचीन भाषा ने भारत की मध्यकालीन और आधुनिक भाषाओं के विकास में अपना महनीय योगदान किया है। आधुनिक भारत की प्राय: सभी भाषाओं ने संस्कृत से शब्दसम्पदा ग्रहण कर अपने शब्दकोश में अभिवृद्धि की है। आज समूचा विश्व संस्कृत भाषा और उसके साहित्य के महत्त्व को स्वीकार कर इसके प्रसार की दिशा में अग्रसर है। आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अध्ययन, अध्यापन और अनुशीलन की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर विकसित हो रही है। इससे संस्कृत की सार्वभौम महत्ता स्वत: सिद्ध हो रही है।

प्रस्तुत संकलन की पृष्ठभूमि

संस्कृत के अखिल भारतीय महत्त्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए प्रस्तुत संकलन का सम्पादन किया गया है। विगत वर्षों में परिषद् द्वारा प्रकाशित विद्यालयीय शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* तथा पाठ्यपुस्तकों की एक बार पुन: आमूल-चूल समीक्षा की गयी तथा *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005* के मानक लक्ष्यों का निर्धारण किया गया। इन लक्ष्यों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है-*भारमुक्त शिक्षा।* विद्वानों का अनुभव है कि पाठ्यग्रन्थों के दुरूह भार से बोझिल छात्र, एक बिन्दु पर पहुँचकर पाठ्यक्रम को 'भार' मानने एवं अनुभव करने लगता है। पाठ्यक्रमों की विविधता, बहुलता तथा मात्राधिक्य – तीनों मिलकर छात्र की अध्ययन-अभिरुचि को प्राय: समाप्त ही कर देते हैं। अत: आवश्यक है कि छात्रों की अध्ययन-अभिरुचि को नित्य नवीन बनाने के लिए शिक्षा (के पाठ्यक्रम) को भारमुक्त किया जाये।

जब शिक्षा भारमुक्त होगी तो वह स्वयमेव एक 'आनन्दप्रद अनुभूति' सिद्ध होगी। यह पाठ्यचर्या–2005 का दूसरा लक्ष्य है। आनन्द तभी प्राप्त होता है जब किसी कार्य में उद्वेग न हो, अरुचि न हो, थकान न हो। शिक्षा के भारमुक्त होने पर ये गुण स्वतः उद्भूत होंगे और तब छात्र स्वयं अपने पाठ्यक्रम में आकृष्ट एवं अनुरक्त होगा। इस आनन्दवृद्धि के लिए पाठ्यक्रम में ऐसे ज्ञान–सन्दर्भों का समावेश किया जाना चाहिए जिनमें उदात्त जीवन मूल्य हों, जिनमें घटना–वैचित्र्य के साथ ही साथ आधुनिक जनजीवन का प्रतिबिम्ब भी हो।

वस्तुतः शिक्षा एवं पाठ्यक्रम का यह पक्ष अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। देववाणी संस्कृत का वाङ्मय वेदों से प्रारम्भ होकर आधुनिक युग तक व्याप्त है। यह वाङ्मय भारतवर्ष के पिछले पाँच हजार वर्षों का एक जीवन्त दस्तावेज है जिसमें राष्ट्र का इतिहास, भूगोल, दर्शन, संस्कृति, सामाजिक उथल–पुथल, नित्य परिवर्तनशील जनजीवन सब कुछ विद्यमान है।

ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि प्राचीन ग्रन्थों से हम ऐसे ही अंश पाठ्यक्रम में समाविष्ट करें जिनमें आज का भी राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिवेश समरस हो। श्रवण कुमार की मातृपितृभक्ति, हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा, वाल्मीकि–वर्णित ऋतुओं का शाश्वत सौन्दर्य तथा कथासरित्सागर, पञ्चतन्त्र, हितोपदेश एवं पुरुषपरीक्षा आदि प्राचीन ग्रन्थों की शिक्षाप्रद कहानियाँ इसी प्रकार की हैं। इनका सन्दर्भ सार्वकालिक है अतः इनकी सम्प्रेषणीयता भी जैसी की तैसी है।

पाठ्यचर्या का तीसरा लक्ष्य भी यही निश्चित किया गया – *जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध।* इस लक्ष्य की पूर्ति तभी हो सकेगी जब संकलित पाठांशों एवं आधुनिक जीवन–परिवेश के बीच सेतु हो, अन्तःसम्बन्ध हो।

पाठ्यचर्या का चौथा लक्ष्य निश्चित किया गया – *शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।* इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमें यह ध्यान रखना होगा कि हमारी पाठ्यपुस्तकें सर्वथा निरवद्य हों, विवादमुक्त हों। संकलित पाठ राष्ट्रीय आदर्शों तथा संवैधानिक मान्यताओं के सर्वथा अनुकूल हों। पुरानी पाठ्यपुस्तकों में प्रायः 'मूलपाठ की रक्षा' के लोभवश उपर्युक्त तथ्यों की उपेक्षा की गयी। परन्तु आज का भारतीय समाज अत्यन्त संवेदनशील है। अतः यह ध्यान रखा ही जाना चाहिए कि किसी भी संकलित अंश से समाज के किसी भी वर्ग की भावना आहत न हो। पाठों से सर्वधर्म–समभाव, सर्वोदय तथा सामाजिक समानता आदि का समर्थन होना चाहिए। किसी भी वर्ग, जाति, समुदाय अथवा प्रवृत्ति की अवमानना नहीं होनी चाहिए और न ही किसी के प्रति प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रीति से कोई आक्षेप होना चाहिए।

पाठ्यचर्या का अन्तिम लक्ष्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर संस्कृत पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में। यह लक्ष्य है – *छात्रों को चिन्तन के लिए प्रेरित करना।* पाठ्यक्रम ऐसा बनाया जाना चाहिए जो छात्रों को स्वयं स्फूर्त बना सके। प्रायः शिक्षक छात्रों को 'निरुपाय' बनाता है यह कहकर कि 'कण्ठस्थ करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।'

शब्दरूप एवं धातुरूप कण्ठस्थ करते-करते अधिकांश छात्र निराश, कुण्ठित एवं हतप्रभ होकर संस्कृताध्ययन से विरत हो जाते हैं। छात्रों में एक भ्रम-सा व्याप्त हो जाता है कि संस्कृत में सब कुछ रटने से ही सिद्ध होगा। जबकि ऐसा बिलकुल नहीं है। कौन-सी ऐसी भाषा है जिसमें छात्र महत्त्वपूर्ण अंशों को कण्ठस्थ नहीं करता? विद्या का कण्ठस्थ होना तो प्रशंसनीय बात है, इसकी निन्दा कैसी?

परन्तु संस्कृत भाषा में प्रवीण होने के लिए सब कुछ रट डालने की कोई आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है तो केवल इस बात की कि छात्र सर्वत्र 'अध्यापकाश्रित' ही न हो। वह स्वयं भी कुछ सोचना विचारना अथवा करना सीखे। किसी पाठ को पढ़कर वह इतना समर्थ हो जाय कि पाठाश्रित लघु प्रश्नों का उत्तर दे सके, किसी अंश का आशय बता सके, रिक्त स्थानों की पाठ्यांश के आधार पर पूर्ति कर सके, प्रकृति-प्रत्यय का समुचित मेलन कर सके तथा योग्यता-विस्तार के अन्यान्य मानकों को भी आत्मसात् कर सके।

निष्कर्ष यह है कि संस्कृताध्यायी छात्र का संस्कृत के साथ नीर-क्षीर सम्बन्ध होना चाहिए न कि तिल-तण्डुलवत् संसृष्टि। यदि छात्र 'संस्कृतमय' नहीं हुआ, उसकी संस्कृत समझने, लिखने, बोलने की क्षमता विकसित नहीं हो पायी तो फिर संस्कृत पढ़ने का लाभ क्या हुआ? यह सब सम्भव है पाठ्यचर्या के उपर्युक्त लक्ष्यों को अपनाने से।

उपर्युक्त लक्ष्यों को चरितार्थ एवं अनुप्रयुक्त करने की दृष्टि से ही 'नवीन पाठ्यक्रम' की संकल्पना की गयी तथा नये मानदण्डों के आधार पर छठी, नवीं, तथा ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों के लिए नयी पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है। इन पुस्तकों का प्रमुख वैशिष्ट्य है-

क - प्राचीन ग्रन्थांशों के साथ ही साथ आधुनिक संस्कृत रचनाओं का भी समावेश।

ख - अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की विविध अनूदित (संस्कृत में) रचनाओं का भी पाठ्यक्रम में समावेश।

ग - पाठ्यचर्या के विविध लक्ष्यों की पूर्ति हेतु नये अभ्यास प्रश्नों, टिप्पणियों एवं योग्यता विस्तार-उपायों का समावेश।

घ - शिक्षण-संकेतों का निर्देश।

पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को दृष्टि में रखकर सुधी प्राध्यापकों एवं विषय-विशेषज्ञों के समवेत प्रयास से निर्मित प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक निश्चय ही संस्कृताध्ययन के क्षेत्र में एक शुभारम्भ है। यह पाठ्यक्रम संस्कृताधीती छात्रों में उन गुणों को विकसित करेगा जो पाठ्यचर्या के लक्ष्यरूप में विन्यस्त किये गये हैं।

पाठ्यपुस्तक-समिति के *मुख्य परामर्शक* के रूप में हमें मार्गदर्शन मिला है संस्कृत के प्रख्यात विद्वान् प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, *अध्यक्ष*, संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) का जो श्रेष्ठ कवि, समीक्षक, अनेक पाठ्यग्रन्थ-निर्माता एवं अनुभव के धनी कर्मठ विद्वान् हैं। *विशेषज्ञ विद्वान्* के रूप में हम लाभान्वित हुए हैं प्रो. केदारनारायण जोशी, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*,

संस्कृत अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन (म.प्र.) एवं प्रो. दीप्ति त्रिपाठी अध्यक्ष, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय से जो पूर्व में भी राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् की संस्कृत सम्बन्धी अनेक परियोजनाओं, संगोष्ठियों एवं उपक्रमों में अपना सक्रिय योगदान देते रहे हैं। समिति के अन्यान्य समस्त सदस्य भी विषय एवं भाषा के मर्मज्ञ, यशस्वी प्राध्यापक हैं।

प्रस्तुत सङ्कलन में बारह पाठ हैं। **'विद्ययाऽमृतमश्नुते'** नामक प्रथम पाठ ईशावास्योपनिषद् से सङ्कलित किया गया है। इसमें ईश्वर की सर्व-व्यापकता, कर्म की महत्ता, आत्मा की विशेषता तथा विद्या और अविद्या दोनों की उपादेयता का निरूपण एवं विद्या से अमरत्व की प्राप्ति का प्रतिपादन किया गया है।

द्वितीय पाठ **'रघुकौत्ससंवादः'** महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंश महाकाव्य के पञ्चम सर्ग से संगृहीत है। इसमें राजा दिलीप के पुत्र रघु की दानवीरता का वर्णन है।

तृतीय पाठ **'बालकौतुकम्'** महाकवि भवभूति द्वारा विरचित उत्तररामचरितम् नामक नाटक के चतुर्थ अङ्क से सङ्कलित किया गया है। इसमें चन्द्रकेतु द्वारा रक्षित राजा राम के अश्वमेधीय अश्व को देखकर आश्रम के बालकों में उत्पन्न कौतूहल तथा लव द्वारा घोड़े को आश्रम में ले जाकर बाँधने की घटना का मार्मिक चित्रण किया गया है।

चतुर्थ पाठ **'कर्मगौरवम्'** श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय एवं तृतीय अध्यायों से सङ्कलित है। इसमें कर्म की महत्ता तथा कर्मी की कुशलता का प्रतिपादन किया गया है।

पञ्चम पाठ **'शुकनासोपदेशः'** महाकवि बाणभट्ट के द्वारा विरचित कादम्बरी नामक गद्यकाव्य से सङ्कलित किया गया है। इसमें राजा तारापीड का नीतिनिपुण एवं अनुभवी मन्त्री शुकनास राजकुमार चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के पूर्व वात्सल्य भाव से उपदेश देते हैं और रूप, यौवन, प्रभुता तथा ऐश्वर्य से उद्भूत दोषों से सावधान रहने की शिक्षा देते हैं। यह प्रत्येक युवक के लिए उपादेय उपदेश है।

षष्ठ पाठ **'सूक्तिसुधा'** में पण्डितराज जगन्नाथ, माघ, भवभूति, भारवि तथा भर्तृहरि नामक संस्कृत के कतिपय प्रतिनिधि महाकवियों की सूक्तियाँ सङ्कलित हैं।

सप्तम पाठ **'विक्रमस्यौदार्यम्'** सिंहासनद्वात्रिंशिका नामक कथासंग्रह से उद्धृत है। इसमें उज्जयिनी के न्यायप्रिय, पराक्रमी, विद्याप्रेमी एवं उदारमना सम्राट् विक्रमादित्य की दानवीरता तथा उदारता का वर्णन किया गया है।

अष्टम पाठ **'भूविभागाः'** मुगल सम्राट् शाहजहाँ के विद्वान् पुत्र दाराशिकोह द्वारा विरचित समुद्रसङ्गम नामक ग्रन्थ से संगृहीत है। इस पाठ में पृथ्वी के सात विभागों का रोचक वर्णन है। इसमें संस्कृत तथा फारसी भाषा के शब्दों का मञ्जुल मणिकाञ्चन समवाय परिलक्षित होता है।

नवम पाठ **'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'** संस्कृत के अर्वाचीन गद्यकार पण्डित अम्बिकादत्त व्यास द्वारा विरचित शिवराजविजय नामक गद्यकाव्य से संगृहीत है। इसमें छत्रपति शिवाजी के गुप्तचर की दृढ़ प्रतिज्ञा का वर्णन है।

दशम पाठ **'दीनबन्धुः श्रीनायारः'** उड़िया लेखक श्रीचन्द्रशेखरदास वर्मा के कथासंग्रह 'पाषाणीकन्या' के संस्कृत अनुवाद से संगृहीत है। इसके अनुवादक डा. नारायण दाश हैं। यह एक ऐसे अनाथ बालक की कथा है जो परिश्रम से जीवन में सफलता प्राप्त करता है और फिर प्रतिमाह अपनी आय का आधा से अधिक भाग अनाथालय के विकास के लिए दान करता है।

एकादश पाठ **'उद्भिज्जपरिषद्'** पण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य द्वारा विरचित प्रबन्धमञ्जरी नामक निबन्ध की पुस्तक से सङ्कलित है। इसमें उद्भिज्ज परिषद् अर्थात् वृक्षों की सभा का वर्णन है। अश्वत्थ अर्थात् पीपल इस सभा के सभापति हैं। वे अपने भाषण में मानवों पर व्यंग्यपूर्ण प्रहार करते हैं।

द्वादश पाठ **'किन्तोः कुटिलता'** भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के प्रबन्धपारिजात नामक निबन्धसंग्रह से सङ्कलित है। इसमें लेखक ने 'किन्तु' शब्द की कुटिलता का निरूपण करते हुए इस तथ्य का उद्घाटन किया है कि 'किन्तु' शब्द सम्बोधित व्यक्ति के लिए सुखदायक सिद्ध होता हो, ऐसे अवसर विरल ही होते हैं।

त्रयोदश पाठ **'योगस्य वैशिष्ट्यम्'** महर्षि पतञ्जलि विरचित 'योगसूत्रम्' पर आधारित संवादात्मक शैली में प्रस्तुत है। इसमें अष्टांग योग का वर्णन सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।

अन्तिम पाठ चतुर्दश पाठ **'कथं शब्दानुशासनं कर्तव्यम्'** व्याकरण महाभाष्य के प्रथम आह्निक 'पस्पशा' से संगृहीत है जिसके रचयिता पाणिनि परम्परा के तृतीय मुनि पतञ्जलि हैं। साधु शब्द का ज्ञान करना आवश्यक होते हुए उसका उचित मार्ग क्या है, इस विषय पर चर्चा उदाहरणों एवं आख्यान सहित किया गया है।

शिक्षकों से निवेदन

शिक्षणकार्य में पाठ्यसामग्री के साथ शिक्षणविधि भी महत्त्वपूर्ण है। अतः अध्यापक-बन्धुओं से निवेदन है कि प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के पाठों का अध्यापन करते समय निम्नलिखित शिक्षणबिन्दुओं को ध्यान में रखें, ताकि शिक्षण रुचिकर एवं प्रभावोत्पादक हो सके।

1. उपनिषदों का मुख्य उद्देश्य वेद के गूढ अर्थ को उद्घाटित करना है। ईशावास्योपनिषत् से संकलित 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' पाठ का शिक्षणकार्य करते समय पाठगत मन्त्रों का सस्वरवाचन भी आवश्यक है। वैदिक भाषा के जो शब्द लौकिक भाषा से पृथक् प्रतीत हों उनकी संरचना के विषय में छात्रों को अवगत कराएँ। मन्त्रों का अर्थ करते समय अभिधार्थ की अपेक्षा निर्वचन से अर्थविशेष को समझाएँ। लौकिक एवम् अध्यात्मविद्या एक दूसरे की

पूरक हैं तथा मानवजीवन के सर्वाङ्गीण विकास में समानरूप से उपयोगी हैं। इस तथ्य से छात्रों को विशेष रूप से अवगत कराएँ।

2. संस्कृत महाकाव्य परम्परा को बतलाते हुये महाकवि कालिदास के व्यक्तित्त्व एवं कर्तृत्त्व से छात्रों को अवगत कराएँ। 'रघुवंशमहाकाव्यम्' से संकलित प्रस्तुत पाठ 'रघुकौत्ससंवाद:' में प्रयुक्त छन्द और अलङ्कारों से छात्रों को परिचित कराएँ। श्लोकों का भाव समझाकर सस्वर पाठ भी कराएँ।
3. महाकवि भवभूति द्वारा विरचित 'उत्तररामचरितम्' नाटक से संकलित 'बालकौतुकम्' पाठ का कक्षा में छात्रों से अभिनय कराएँ।
4. श्रीमद्भगवद्गीता विश्वप्रसिद्ध ग्रन्थरत्न है। 'कर्मगौरवम्' पाठ के आधार पर करणीय कार्यों में सदा संलग्न रहने के लिए छात्रों को प्रेरित करें।
5. महाकवि बाणभट्ट संस्कृतसाहित्य के सर्वोत्कृष्ट गद्यकार हैं। उनके व्यक्तित्व और रचनाओं से छात्रों को परिचित कराएँ। 'कादम्बरी' से उद्धृत 'शुकनासोपदेश' पाठ के अनुसार युवावस्था में प्रवेश कर रहे छात्रों को अनुशासित करें। पाठगत समस्त पदों का विग्रह आदि समझाते हुए भाव स्पष्ट करें।
6. 'सूक्तिसुधा' के अन्तर्गत पण्डितराज जगन्नाथ, माघ, भवभूति, भारवि एवं भर्तृहरि की रचनाओं से सुभाषित संकलित किए गए हैं। सूक्तियाँ निश्चित रूप से छात्रों के लिए उपयोगी हैं। अत: सुभाषितों के महत्त्व को समझाएँ तथा छात्रों को तदनुसार प्रेरित करें।
7. 'विक्रमस्यौदार्यम्' पाठ के माध्यम से छात्रों को कथा-साहित्य से परिचित कराएँ। पाठ के माध्यम से मित्रता, उदारता एवं दानशीलता आदि गुणों के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न करें। कथाशिक्षण की विधि का उपयोग करते हुए गद्य का आदर्शवाचन एवम् अनुवाचन का भी छात्रों को अभ्यास कराएँ।
8. 'समुद्रसङ्गम:' से संकलित 'भूविभागा:' पाठ का अध्यापन कार्य कराते समय छात्रों को दाराशिकोह के जीवन एवं दर्शन तथा रचनाओं से अवगत कराएँ। छात्रों को रचना की शैली, ऐतिहासिकता एवं गद्यात्मकता को विशेषरूप से समझाएँ।
9. संस्कृत के प्रमुख अर्वाचीन गद्यकार पं. अम्बिकादत्त व्यास के जीवन एवं कृतियों का छात्रों को परिचय दें। पाठ के अनुसार कर्तव्यनिष्ठा के प्रति छात्रों को प्रेरित करें।
10. अन्यान्य भाषाओं से अनूदित संस्कृतरचनाएँ आजकल प्रचुरमात्रा में उपलब्ध हैं। उडियाभाषा से अनूदित पाठ 'दीनबन्धु: श्रीनायार:' के माध्यम से कर्मदक्षता, दाक्षिण्य और सेवाभाव आदि गुणों को अपनाने के लिए छात्रों को प्रेरित करें। संस्कृत में पत्रलेखन का छात्रों को अभ्यास कराएँ। इस अवसर पर अध्यापक बन्धु उडिया के वर्तमान साहित्य एवं लेखकों का भी परिचय दें।

11. 'उद्भिज्जपरिषद्' पाठ में सभापति अश्वत्थ (पीपल) के भाषण के माध्यम से वृक्षों के प्रति मानवीय व्यवहार का वर्णन है। छात्रों को वृक्षों के महत्त्व को बताते हुए वृक्षारोपण के प्रति प्रेरित करें। पं. हृषीकेश भट्टाचार्य तथा बाणभट्ट की गद्यशैली की विशेषताएँ तुलनात्मकदृष्टि से छात्रों को समझाएँ। इसी के साथ ही पर्यावरण के भी प्रति छात्रों में चेतना उत्पन्न करें।
12. पं. श्री भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के जीवन-परिचय व रचनाओं से छात्रों को अवगत कराएँ। 'किन्तोः कुटिलता' लेख के अनुभूत भाव छात्रों के समक्ष स्पष्ट करें।
13. योगदर्शन केवल ज्ञान का ही विषय नहीं, अपितु जीवन में प्रयोग करने का विषय है। यम एवं नियम के पालनपूर्वक आसन प्राणायाम आदि के अभ्यास से युवक-युवती असीम शारीरिक, मानसिक एवं नैतिक बल को प्राप्त करते हैं। शिक्षक छात्रों से इस बात पर चर्चा करें तथा व्यवहार में लाने के लिए प्रेरित करें!
14. इन्द्र-बृहस्पति आख्यानक के माध्यम से कैसे संस्कृत भाषा में असीमित शब्दराशि है जो कि विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं, तथापि उन शब्दों का ज्ञान-लाभ के लिए लघु मार्ग व्याकरण है, इस बात को शिक्षक छात्रों तक पहुँचा कर उन्हें व्याकरण अध्ययन के लिए प्रेरित करें।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

विषयानुक्रमणिका

मङ्गलम्

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभि-
र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥1॥

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥2॥

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥3॥

मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तुः नः ॥4॥

भावार्थः

हे देवगण! हम कानों से कल्याणकारी (वचन) सुनें, आँखों से कल्याणकारी (दृश्य) देखें। सभी स्थिर अङ्गों (स्वस्थ इन्द्रियों) से स्तुति करते हुए दिव्य आयु को प्राप्त करें ।।1।।

सुरभित वायु बहे। नदियाँ मधुर जल से युक्त हों। ओषधियाँ हमारे लिए मधुमय हों ।।2।।

रात्रियाँ मधुमय हों। प्रातः काल मधुर (सुप्रभात) हो। पृथिवी की धूल भी मधुमय अर्थात् मधुर अन्नप्रदायिनी हो। द्युलोक (नक्षत्रलोक) प्रकाशमय हो। परमेश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हों ।।3।।

वनस्पतियाँ हमारे लिए मधुर होवें, सूर्य मधुर (अन्नादि देने वाले) होवें। गायें हमें मधुर (दूध देने वाली) हों ।।4।।